

minic 3

H.R.I.D.A.I. क्रमांक १५१२३१०

अंक

संकर

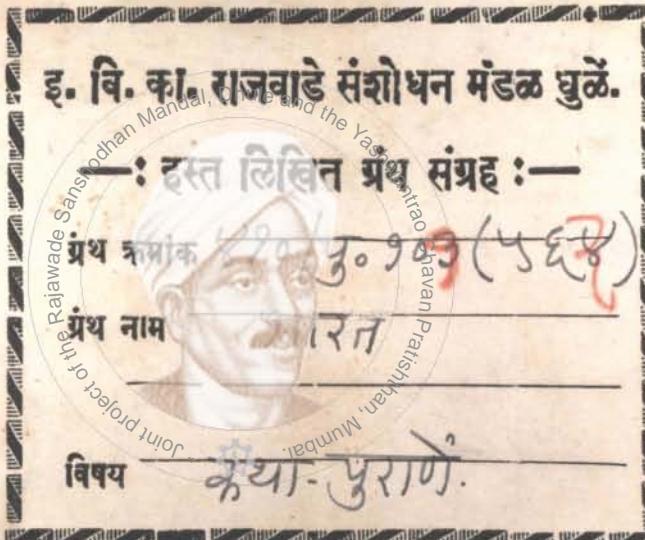
इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

—: हस्त लिखित ग्रथ संग्रह :—

ग्रथ क्रमांक २०६९७ (५६८)

ग्रथ नाम अरविंद

विषय कथा-पुराण.



॥१॥ श्रीगणेशायनमः ॥ उत्थजान्त्रिप्रारंभः ॥ २॥ उत्तमोलिलाविश्वसरस्वामी  
 ॥ तुष्टियेस्वरुपपुरब्रह्मि ॥ पंचायतनं पञ्चनामी ॥ कल्पीजेतिजावयव ॥ ३॥ तेष्येशि  
 वत्तेनिजमस्तक ॥ विष्णुस्त्वर्दयहास्तक ॥ सबचरएविनायक ॥ वामते  
 शक्तिसाजीरा ॥ २॥ याचाहान्तिजान्त्रिप्राको ॥ जेवसुवेगलेङ्गरेकावो ॥ तेष्ये  
 आननमनेयेकात्मनावो ॥ जात्येतेनिजनमन ॥ ३॥ ऐसिन्नांडवलाचिनि  
 जग्मति ॥ शुरुसंकेतेनिजमनसंश्लिष्टि ॥ बाधोनिमगहेविचित्रशृष्टि ॥ वा  
 नावारिधेतसे ॥ धाकीनामिकमखातमगस्तु ॥ मध्यकर्गंभरमारमणु  
 ॥ स्कधावरुताविलोचानु ॥ ऊगत्रैतोषेकु ॥ ५॥ ततयापुरुषारम  
 लाग्नि ॥ आष्टोनावामाजाष्टंगिं ॥ नमस्कारेनिमगव्रुम्यग्नि ॥ सवेसंतोषे  
 निवेदु ॥ ६॥ माध्याक्षनिश्चेहंस्तत ॥ ऊंगप्रत्यंगिमद्देनकरिता ॥ त्यसा  
 द्वारासुखनेगिता ॥ आत्मारामहृदयस्त ॥ ७॥ आन्तर्युक्तरसाचेनि

बोधे॥ आलिहरि हरनाम न्नेदे॥ होचिजा लेसा आनेद न्नेद॥ आवडित उपजे वह  
वया॥ ८॥ आत्मा कैला सकंटि ख॥ कालकु जरमंजन देव॥ ब्रह्मेश दिवि बुधस  
र्व॥ पाह पन्ना पुजा रे॥ ९॥ कैवल्य क। नक स भापति॥ तांडुरं कर उदरे कि॥  
१०॥ चिह्नं बारे श्वर चिन्मुक्ति॥ कामाट विद्याहक॥ १०॥ जो दश नुज पंचानन  
॥ आघ्रच मार्ग र परिधान॥ कर्त्तर गोरग जाजीन॥ श्रेष्ठता वन चाहले॥ १  
१॥ प्रभाकर श्रंग कोटि॥ तुलह लेनि न ता कटि॥ कुरुग मिरवे कुरुग सं  
हष्टि॥ विषाल नालिकुटि छेंदु॥ २॥ तथा यायं पाति र विरुपाह॥ गोरि व  
ध्रि रि कल्प वृक्षा॥ हान दिक्षा गुरुज्ञा हक्षा॥ सीक्षा कर्त्ता दंडवत॥ ३॥ जया  
धमनो हया चावार॥ द्वय टे मनो रूपत रुवर॥ अविद्या कुसुमि नीबन्न  
मरा॥ नियमुक्त तास्वन्नावे॥ ४॥ या चेना मस्ति दिवर सुजीकैला गेनि मि  
म्बले रमु॥ तैसं सार रोग चानाशु॥ जानया सेना विका॥ ५॥ औसि या सामु

Digitized by srujanika@gmail.com

आदिप.

२

१

असुखवर्धना॥ प्रणमश्रीकौल्यमहिकार्जुन॥ आषेनकर्मविजनर्जना  
 लागिन्नारणरिघालो॥ १६॥ अगताञ्चतरघारकाधामि॥ जोकाआवाससक  
 लकामि॥ विमलवेराष्ट्रबद्धिकाम्रमि॥ नारायणनरक्षपेण॥ १७॥ काशाकंचि  
 वरहरजश्चमसुंदरचल्लर्जुन॥ शंखचक्रगदाबुज्ञ॥ आनयपालिनेरका  
 १८॥ ईदिरामंदिरहृदयनिवासि॥ स्वानहृदयावनविलासि॥ कोटिकंद  
 वर्णावएपरासि॥ विरक्तवेधिदेधाला॥ १९॥ मार्तंडकोटिरकिरणे॥ मक  
 राहृतिकुंउलेश्वरलि॥ शुक्रमालानारकावर्णि॥ चंद्रतैसरकोस्तुना  
 २०॥ सोहामिनिपुदकुलवैशे॥ जागतिननार्दनाचेयेकासे॥ विंबाध  
 रिमजिसुकासे॥ हैंतरलेश्वरकति॥ २१॥ आकर्णनयनासीककिरा  
 ज्ञातिलकमनोहरा॥ मृगनाजिरेखिलासुदरा॥ तनुचर्वितचंदने  
 २२॥ आवलोकितपृष्ठमयाग्ना॥ सकलदुरितहेष्यन्नग्ना॥ आटवितामन

प्र. १

राम

२१

मनन्तेगा॥ दिपलाहोयपतैगा॥ २३॥ ऐसियास्वामिरा॥ धामा काबेरिटिवह  
गंमा॥ चढ़ोवटिचाप्रेमा॥ हरदईवसेमा प्लिया॥ २४॥ आतावालाकंविजकं  
हि॥ विरुद्धलेहस्तपादि॥ संगुलासुरंगतेचाउहधि॥ गज्जाननुनमिय  
ला॥ २५॥ दिसेसाजिवकनकास्तले॥ स्वरूपधरिलेसद्वजलिले॥ त्रुतिसि  
धीचेस्वर्गजवले॥ तोगनरितजयापस्ति॥ २६॥ देहरुबिगण्डचेपाले  
॥ तोगितास्त्रग्गपवर्गफले॥ त्रसारबोपियाकौगते॥ चिदानंदमोह  
का॥ २७॥ कृपामहाकिनिअदि वने ततुर्शविधानंदनवने॥ पाके  
जलितेथेस्तुमने॥ साधकज्ञाले/सिषुब॥ २८॥ हंतंदिनकरवियादि  
सि॥ दवउविघ्नतमगति॥ नानाहर्जनेदिपावति॥ जेमध्यस्तुयुरुले  
॥ २९॥ निर्जरकाले जर्जरहोति॥ तेज्याचेनिजाश्रये द्विति॥ तोमाज्ञि  
येदुर्वंजमति॥ हेतुन्मेवधनहाता॥ ३०॥ आतरस्त्रातफलसं

२८

त्र.१

आदि

३

(३)

जारि॥ कम्बलति काञ्चनिसाजिरि॥ ज्ञानगंगे चमाव्रस्तरि॥ वेषेव्रस्त  
 कुमरिच्छा॥ ३१॥ लोकलवएपनवनागरि॥ शृगंगरश्चीपर्वतज्ञामरि  
 ॥ सहित्यवाएलिंगाविखरि॥ विषालनदैनमर्द्वा॥ ३२॥ प्रमोव्रपोता  
 सावृंगजा॥ विघासुलपिटजगद्वा॥ वाहुर्यसोन्नापश्चेजा॥ कुल  
 स्वामि लिकविद्वि॥ ३३॥ भवरसाविमंहाकिनि॥ सहिमेनेचाहत्रि  
 लुवनि॥ तिहेलोकवरहार्या॥ देवत्रयापूर्णियंति॥ ३४॥ निगमकाम  
 धीनुच्छाउदरेसारनवनितउरेच्छा दुरि॥ हाहनमैषनावंचुनिकरि  
 देअ॥ ज्ञानबालका॥ ३५॥ तेकुलसिनिरुनकत्यागणि॥ आधेरवालिस  
 कलज्ञालि॥ जासिनिर्वालिजिवालि॥ चुतुरसुवासिनियांचिजे॥ ३६॥  
 विलापुस्तकरुकधारिलि॥ मुखेहरिप्रपरेहरिलि॥ यांडिसदनेसु  
 रवकारिलि॥ तेवंदिलिनगरहा॥ ३७॥ तिनेज्ञानुर्यहाचाहुतुसिरिते

रम  
३

विलावरहवनु॥लेनुस्तामनोरष्टु॥सर्वहासुफलासासेनि॥३७॥अ  
तकधे चे आन्त्रेत्र॥घालिविश्वामाजियवित्र॥तेथेस्वामिएमस्त  
तंत्र॥पार्दकिमात्रताकिजे॥३८॥हेक्षडेलसुपायानिका॥परि  
गुरुआ॥र्णवेअंजनहेवा॥प्रसन्नतेच्छिन्नग्परेवा॥नसतानिधा  
नकेजेडे॥४०॥लालउनिहेवतासमेत्तेहिलयेकगुरुच्छिमास्तविला  
॥आनेदेनकिचेनिलुलला॥आज्ञा पैतागनेजमुखे॥४१॥त्यारुके  
एवसंतवाते॥मुरमनाचेतकजते स्कृत्रिचेपत्तवपातबतेथोक  
कविलफलेफलनस॥४२॥लालेबालकेघेतलायाया॥तेसाचकरुनि  
हास्तविमाया॥तेविलांआहरोनेतेवाया॥केविभालिहवडले॥४३॥मु  
क्तेस्वरजोमिन्मावधुत॥मासेनिनामेमुञ्जकित॥कथाविस्तारिनारभ  
माहाराष्ट्रपदबादि॥४४॥मुलन्नारतिमाससंगे॥गलेशआपलिने

(38)

प्र.९

आहि.

॥४॥

(५)

हितावेगे॥ येषेमीकतीत्यहिताऊंगे॥ संतप्तप्रार्थनात्कांकिजे॥ ४५ जो  
 मिपरब्रह्मनातलेवाक्षिः॥ त्यासंत्वामाज्ञेयाउत्साहात्तिंसासीजेझान  
 सशरण्होति॥ त्याकैवल्ललेखले॥ ४६॥ जोअैस्त्यर्थेनचडेमदादर्शे  
 दृतल्लभिन्नश्रिवेकहा॥ निंदिभाविनकरिनिंहा॥ तोनारायणनरुपे  
 ॥ ४७॥ परेत्क्षेत्रिवैरमनि॥ समानबुधिमानापमानि॥ हंज्ञाचारसुं  
 तिलाजनितानारायणनरुपे॥ ४८॥ कमक्रोधाच्यात्तुतसंचारे॥ नचले  
 सुविचारपंचाह्नरि॥ परधनपरस्त्रिमास्तुनिदुरि॥ तोनारायणनर  
 रुपे॥ ४९॥ स्वधर्मकहंरयहा॥ ५०॥ तिक्कालिंगकृत्यनुवाति॥ रहुनि  
 राहाटेस्वधर्मयंधि॥ तोनारायणनरुपे॥ ५१॥ हरिहारनामचियाजिव  
 ति॥ जिक्कातलयेहोउनिमिनि॥ कुतक्सीमण्णसमानमानि॥ तोना  
 रायणनरुपे॥ ५२॥ सज्जनश्रोतियंदेखुनिदुरि॥ गर्वस्त्यर्थेचाधा

राम  
॥४॥

निबुहैरि॥मास्तकेस्तु दिवाटपुद्गारि॥तोनारयएनरस्प॥५२ सुंहरअना  
मिकान्निनारि॥स्वानमांसधरिलेकरि॥तेहैखोनिब्रालएसहाचारि॥ईष्ठा  
नधरिहीहिच्छि॥५३॥तैसाहेहबुधिजाहाति॥आमंगलसंसारेसंपा  
ति॥ऐसिईतैसाधुसंति॥कहाकजातेनातलिजे॥५४॥मीउंचपैलहिन  
याचेनामहानिमान॥ठोउंगानिसानगेलियांस्थान॥रुकरनासेयुरु  
ले॥५५॥लएउनिसियाचेहिपगवालि॥समुक्तनेघमस्तकिंबंदुनि॥तं  
चरित्रलसुखाचिधलि॥केचिन्नाधेयाते॥५६॥ऐसियासंताचेहास  
तेरंक्रादिकाचंक्रादिकाचेइव॥त्याचेप्रसादिसावकाक्षरिधीसिधि  
वोलगति॥५७॥ऐसेयुरुवाक्यहोताज्ञलि॥जेजेसंतईहेलज्ञालि आ  
स्तिसातेलोटांगलि॥हंडवतप्रतिकावे॥५८॥आताप्रसंगासारिरवे  
योहि॥आसतातोचिट्ठहोकांहि॥वेगुएपसाडावयादेहि॥साध

(48)

प्र.१

आदि  
५

(5)

कंजनिजाएवे॥५४॥ नेटतान्तोटविक्रीधकाम॥ जाञ्चुतक्षेहि निसोद  
 पम॥ स्वार्यालागि हिं साधम् सहाचारजयाचा॥६०॥ जाएि वेचे महि  
 रापान॥ करुनिसैरावाजविवहन॥ हेललछलएचेपाषाण सा  
 धुकडे सुगारि॥६१॥ तयोक्षणावियाम्बधिया॥ गुरुनिहेहनाखालचे  
 पाषाण॥ साधुकडे मवाक्षलिया॥ वाचेवियम्बोवारिया॥ ज्ञानहेतियो  
 सैणे॥६२॥ लोभमध्वरैचाचे॥ इता आजिकवाधे हलहिकुटा॥ मिन  
 आचारेलाउनिलोटा॥ त्वासाटे स्तानजेजाले॥६३॥ वेहनास्त्राचे  
 सहन॥ सांडुनिफलतेनदनवन॥ पारखडंचैवरडेजाल॥ ऊगम  
 आजिचामिकपंथि॥ हिवाजितमाजले राति॥ विहित्तचारजयाचा॥६५॥  
 +॥ आनिस्त्रवाहेसोकरि॥६६+॥ भहितपरनिदेविविष्टा॥ पापहेह  
 योसितिमोटा॥ शुकरकुकमर्चवाटा॥ कुंसुंगसग्गचालति॥६७॥ वा  
 राहठोनयतेरिति॥३॥

रम  
५

५८  
वेसमा यकाआवगुणविमासि॥ अंनंतगुणगोड्यासि॥ हाउनिसल  
विकथारसिओरुनिखालिज्ञोजना॥ ६८॥ आपुल्याकवित्वाचाकवडा॥ मिर  
विसघनसन्नेषुरा॥ साटिकरिनस्त्रेहोजा॥ महत्वकरिरत्नासि॥ ६९॥ जायं  
आयंजासंतस्त्वलिज्ञेजयातेसासिहेप्राप्थिजाहरेबहुते॥ जामन्त्रेष्य  
ईजेमेष्ये॥ कथास्तत्त्वोजना॥ ७०॥ श्रीगुरुजासेजाभावेरे॥ पुदित्रक  
थेचित्रयाबुदिवारे॥ हष्टयुलचेहेवरे दुखदारिङ्हारिल॥ ७१॥ ऐसे  
आस्तापितावहेला॥ जाविवेदवाविदाकिटला॥ लएउनिजाचा  
र्यपाडुकाजाला॥ सर्वविद्यार्घाधिकारे॥ ७२॥ बासवेहंतिनेटका ज  
यमिनिवसिष्टमिमांसका॥ आलिगेतमनेयायका॥ हंडप्रलम्बसन्नावे  
७३॥ सांखचोर्यकपिलमुनि॥ नाथाचार्यपरमंज्ञानि॥ पातांजतिसह  
स्त्रफलि॥ देवविशेषवंहिला॥ ७४॥ गेडपादश्रीनांकरु॥ विवर्णचार्य

प्रा० १

आ० ८

६

६

आण्डीधरु॥ टिकाकारामाजिचढुरु॥ नमस्करि लेखुरुरुषे॥ ७५॥ प्राकृत९  
 कविस्वराचार्ये॥ ज्ञानदेव वस्तानैक्यवर्ये॥ जयाच बुधि चेणं जिर्ये॥ आग्नध९  
 सिंधुस्तारिरवे॥ ७६॥ स्वाचेचरणि वितिलेसना॥ तेलेपावनजालो जनि मा  
 त्रजनकजनार्हनि॥ युक्तनाथनमियला॥ ७७॥ आतानसुस्तासमृज  
 ॥ जेष्ठेजन्मलाचातुर्यचंपा बोधसुधोचा सुधोप्र। जिवविजित्तासचकोस  
 ॥ ७८॥ आरिविलनिगमाचियाजादनि॥ लकड़ीलाचि वेवेलिपुरालगा  
 यतरगिलि॥ दुक्तिवातेउचंबलितु॥ ७९॥ दिव्वज्जनरलाचेपुजा॥ ज्ञान  
 विज्ञानसुतेजा॥ यवित्रपलति धराता॥ ८०॥ गंगिरतेजाग्नधा॥ ८०॥ न्याय  
 गुरुमयादिवेलौ॥ जेष्ठेनुलधेकहाकाला॥ तयापरमपुरुषाचामेला  
 सिंधुरुपेनमियला॥ ८१॥ तिथिलश्रोतेहोपरिसले॥ तुमाचेनिजाव  
 धानपरेसेयले॥ मासेवन्त्वलोहहेलौ॥ होईत्तरञ्जामोजकांचन॥ ८२॥

रम

६

मग्न गच्छियाकर्ण नु बए ॥ यो ग्प होई लानि श्वयो जाए ॥ याला गितु मते  
उन्हः पुहू ॥ ब्रह्मिया तसा षांगि ॥ ८३ ॥ धरवेना तेंधरि लेमनि ॥ तेंसि धिया  
वावा कृपे करनि ॥ जे विवान्तरि शेतं धनि ॥ सामर्थदेतारघुनाथ ॥ ८४ ॥  
आजुलिवेउ विसंधादक ॥ ब्रह्माउ उच्छुलै अग्निका ॥ तुलिकर गततरि  
हेनयेका ॥ तें विजागस्तकान्ते यु ॥ ८५ ॥ दर्शने वृत्तिपुराले ॥ नानाईति  
हासबाकर्ले ॥ गलोनि पर्विरसायने दैपायने कुशलत्वे ॥ ८६ ॥ सुरसा  
सुंदरपवित्रशृष्टि ॥ आन्तेतिमन्तिपाटि ॥ संस्कतश्वसुवर्लताटि श्रे  
ष्ट्रेष्टाकोगरिले ॥ ८७ ॥ तेविरससोयु उर्बलपालि ॥ माहाराष्ट्रजायारंजाय  
ली ॥ वाटिलितरितुकालु जनि ॥ नसेविजकिमर्थ ॥ ८८ ॥ समर्थपर्विक  
विपंडिति ॥ सर्वज्ञबारलु दिति ॥ गिर्वालपद्मातरि नियुति ॥ कनकक  
मृत्तिअग्निजे ॥ ८९ ॥ तेयेऊसामर्थचाबोट ॥ घनुरपुष्मेआमुचेबो

व्र.१

रम  
७

ल॥आत्मतिविनिमोल॥काउवातेकेंउनि॥४०॥तथायिदोहीठाई  
 सरुसा॥मोहकरहाभरवसा॥सानेघोरहेमहेक्षा॥भजताऊसे  
 कडेसनि॥४१॥तेचिअर्थधालितादिटिनस्तले संस्कंतमहा॥टि  
 रत्नकुंभिकामदुघटि॥गंगाटकसारखि॥४२॥आलिईश्वरनुचि  
 डोलसु॥त्यसिवण्ठवलाक्षीषु॥नुपजेतैमिलुर्धव्रकाषु॥नेलेप्रजा  
 तमाते॥४३॥श्रोतेलुएतिनवला व्रेति॥आमत्रलेचिजालित्र  
 सिषुटिलनीजनाचिंगति॥उननि गाँचासर्वथा॥४४॥आतावक्ति  
 यायावलासर्व॥कधाआरामडा॥तेजापुर्व॥समंधलाविपर्वि  
 यर्व॥क्षानुसंधानश्वरवला॥४५॥जाजीप्रसादस्तले निवक्ता॥न  
 मस्कारेनिहोयबोलता॥तेचिसादरेपरिसाआता॥कथाकलि  
 मलनगर्वानि॥४६॥आधिचन्नारथमहासमुद्र॥वरेविस्तारिकवि

आदि

७

(7)

स्वरा॥ तरिश्चोतयान्नासनयंकर॥ विवर्तिषु दिलियासारिखे॥ ४७॥ स्मरेत्  
मिकधानयेगलिता॥ सविस्तारनयेपाल्हालाता॥ जैसेविहितंक  
मर्मकरिता॥ योउनसांगसंपाहा॥ ५८॥ उपाधिघातेवेटालित॥ सिक्का  
वलोकनेपउतालिताता॥ चढुरअवरेद्यातकागमत॥ ऊमृताचि  
घांकुडि॥ ५९॥ आताविश्वभवालोमहर्षली सोतीपुराणिकसज्जनि  
ज्ञातवंतरुषिदर्षली॥ जैमिन्नारणा पातले॥ ६०॥ तेथेदादशवर्षि  
कसत्र॥ रुषिक्रेनकेज्ञारन्निले वित्र॥ त्रिनलब्रह्मरुषिष्वित्र॥ स  
सितदृतिअापार॥ १॥ तेमुनिवयहत्वानिदहि॥ नयेंजेडिलाकरसपुटि  
नमस्कारधरलिताटे॥ सकलिकातेघातला॥ २॥ सन्नानुयरमरुषि  
आदरेज्ञासनेदिधलिसासि॥ गोरउनिललेतेकैसि॥ जानवेलाज्ञा  
जिवि॥ ३॥ सत्कथेचाज्ञावर्षली॥ अरुनिज्ञामृतसिंधुचेपाणि मेघधा

२०

आदि०

(८)

उत्तमाप्रितिकरनि जगहि श्वरेयाहाया ॥४॥ नुस्तियावस्तुत्वलक्षणपि  
युवा ॥ सकलिसादरतले हेरवा ॥ वेडविलाकलंकुषिका ॥ पारमर  
सुलए वोनि ॥५॥ सोति लले स्त्रामिरहि ला ॥ जन्मसंग्रह सार्थक जाला  
दरिश्वाचकने ने वरिला ॥ गणहै लुपति ॥६॥ जन्मो जया चैसर्प  
छत्रि ॥ वैरां पायन पवित्र वन्त्री ॥ वदला तियाधरि ल्मा श्रोत्रि ॥ चित्तक  
थाको तुके ॥७॥ आसन्नकर मासि गगा ॥ ना रथ कथालहाए मुन  
गा ॥ तिसजा गिरध्यजालाजगा ॥ वैरां पायन वीवे कि ॥८॥ मित्रे र्णकाराह  
हय कलासि ॥ धारले स्त्ररणा च जावकावि ॥ तो मिनि वे दिन स्त्रामि  
सित्तार्थ प्रसाद बिंडहा ॥९॥ क्षिराद्विशाई नारायण ॥ तो चिक्षमादै पा  
यन ॥ हेउनि जार घिमि सेजाए ॥ पंचमेवैह प्रगटिला ॥१०॥ लएगनि जा  
रथीन दिसेकाहि ॥ तेब्रह्म प्राणि तजन्मलेन्नहि ॥ न ब्रह्मज्ञ जास्ते

प्र. १

पाहि॥ पाटवलेजारति॥ १६॥ तेसाटिलहज्जनारतहेखा॥ अर्धवोपिलेहे  
बलो॥ यधरालहस्यापिलेहेखापित्रलोकिपातरार्था॥ १७॥ चौहाल  
हज्जगंधर्वञ्जुवनि टेविताजालावासमुनियकलहक्षपाकरुनि  
मत्युद्गोकिटेविले॥ १८॥ नारहसागेसामस्तसुरा॥ आसितहेवक  
लयिपितरा॥ यहरम्हसविधाधरा॥ शुकस्वामेस्वयेसांगे॥ १९॥ या  
मनुशप्तोऽकालाग्नि॥ वेशंयादनमसवंहजग्नि॥ सांगताजाला  
तिज्ञप्रसंगियरिहि तिष्ठरासता॥ २०॥ ऊदैपर्वसन्नायवर्वननविरा  
टउद्योगयर्व॥ ज्ञिष्मन्त्रोएकलपर्वत्यग्नादाहवें॥ २१॥ सेसा  
कस्त्रिपर्वशंतायर्व॥ अनुश्वासनजाश्वमेधपर्व॥ वासाश्रममुष  
लपर्वसेलावेहेजाएिज्ञे॥ २२॥ माहाप्रस्यानिकसत्रावे॥ स्वर्गरो  
हणआठरावे॥ नारथपर्वचिहिनांवे॥ अनुक्रमेजाण्णचि॥ २३॥ तेचि

(४)

हरिवंशसहित सावालहमाहान्नारथा माजिअरम्मानबुद्धत स  
 नकसुज्ञातिगितादि ३६॥ आटरासहस्रउगाहश्चैते॥ कासकृतक  
 टिएयथें॥ व्यासश्चुकज्ञाएगित्तार्थ॥ जाएतेलेसंजयो २०॥ प्रात्रयो  
 गेहैपायन॥ विचित्रवार्यस्तेत्रिज्ञाण॥ वाटतेकेलेकुलसंतानं रेतो  
 इकेआपुलिया २१॥ धतराष्ट्रवंडनपति॥ तिसरासांडवश्चायेसु  
 मुमन्त्रिविडररहितापक्षपाति सर्वकावाधर्मचिता २२॥ धतराष्ट्रावै  
 गंधारा॥ पांचपांडवपंडुनेटमर चूचेराहटिचाप्तकार॥ दृक्षदष्ट  
 तेपरिस्तेजे २३॥ आहंकारहमुद्योधन॥ शकुनिक्षाखारवाहैया  
 काली॥ पूष्पिफलिउद्गासना॥ मुखराजाधतराष्ट्रा २४॥ अगताधर्मतो  
 स्वधर्मस्वरुपदम्॥ खादियायार्यश्चकान्तिमस्त्रकेसि॥ गंजितांज  
 याक्षामानसि॥ मांसांडिलैरेसंजया॥ धफलिपुष्पीआतित्रतम् मा

५ पुत्रमिरवले ॥ २५ ॥ मुजस्याग्रालु एदेव कृष्ण ॥ जो परमात्मा जगद्विष्ट  
लए निष्ठा लिता सहि छु ॥ धर्मार्शजाध मर्त्मा ॥ २६ ॥ पहिं ले को रवधं  
उवजनना त्यावरि लखाय प्रहिदहन ॥ घुतक्षेय देवस्त्राहार ए ॥ वना  
जिग्मन त द्योगे ॥ २७ ॥ मत्सर्व ईश्वाहन वास ॥ गो यह ए को रवत्रा  
स ॥ संधि मो उनिवारका धिषु ॥ आलिया संत्राम मंडला ॥ २८ ॥ आका  
र आहा हि ॥ ए सेना ॥ साम ॥ लिते असर जाए ॥ साधज लेडर्ये  
धना ॥ धर्मचिनि ईसात्वे ॥ २९ ॥ सात आहो हि लियांत ॥ निया स्त्री आ  
कृष्णानाथ ॥ आसिरो धावरि धुनदे ॥ ३० ॥ दरा  
दिव संगंगात्मज यांच दिव सभा रघाज ॥ दैनदिव स कर्ल राज से  
ना रहेक स आमि ॥ ३१ ॥ आर्धक्षेत्र अर्धगढा आटरा दिव स सप  
स्त्रियुधा ॥ तेच्च दिव स स्मरो निष्ट हा ॥ कोए पुत्रे धातले ॥ ३२ ॥ धष्ट

आदि०  
१०

(१०)

३७। न्मादिप्रैयद्विकुमर॥ वधुनियलालाभा ति सत्वर हेदेखोनिप्रल  
यवैश्वानर॥ भिस्मिमपरक्रमि॥ ३८। पाटिलागोनिधाविलाकाल दे  
खोनिब्रूसास्त्रुगुरुचावात्॥ देवनिरस्त्रेहाशुगोद्॥ ऊयांडुविहोयने  
॥ ३९॥ हेदेखोनिनिवैलपाद्य॥ तस्त्रित्राकरुनिरुग्नत॥ मणिहिरोनिजि  
वकुक्त॥ प्राणद्वानेसोषुला॥ ३५॥ ऊघाहुतिनदिनंदन् पुर्णहुतिषु  
येधन॥ ईतुकेनिसग्रामज्ञाला पूर्ण पांडुवाप्रिष्ठापात्त्वे॥ ३६॥ हेदेखि  
अनुक्रमाचियुक्ति॥ पश्चात् प्रमानुनिवाति॥ धृतराष्ट्रासजयाप्रति  
सतरिष्ठोकिवैलिला॥ ३७॥ सुभृत्राप्राप्यज्ञालियापार्थी॥ यादवपा  
वलेईप्रस्ता हेएकताजयाचिवातरा॥ म्यसंडिलिरेसंजया॥ ३८॥ ल  
हज्जेदुनिसाहेये॥ द्वोपदिजिकिलिसाहेये॥ तेकाचिजयाश्वसंकल्पे  
म्यासंडिलिरेसंजया॥ ३९॥ उहाज्ञेहुरिहुनिवैचले॥ पांडालाचेजा

प्र०९

राम  
१०



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)